

उच्च शिक्षा में महाविद्यालय पुस्तकालय की बदलती भूमिका: चुनौतियां और संभावनाएं

अवनीश मिश्रा

(पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान)

डॉ. नंदकिशोर पाटीदार

(पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान)

Received– 07 September - 2026

Accepted– 10 September - 2026

Published– 30 September-2026

Corresponding Author-

अवनीश मिश्रा

(पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान)

DOI- <https://doi.org/10.67275/SU.2026.041512>

Funding Policy-

‘Shodh Utkarsh’ is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.

वित्त पोषण नीति-

‘शोध उत्कर्ष’ एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -

© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).

कापीराइट सूचना-

© 2026 लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।



प्रस्तावना: उच्च शिक्षा में पुस्तकालय की प्रासंगिकता

महाविद्यालय स्तर पर शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि छात्रों में स्वतंत्र चिंतन, शोध प्रवृत्ति और ज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति में महाविद्यालय पुस्तकालय की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। पुस्तकालय केवल सूचनाओं का भंडार नहीं है, बल्कि यह वह बौद्धिक प्रयोगशाला है जहाँ छात्र और शिक्षक अपने ज्ञान की सीमाओं का विस्तार करते हैं। डॉ. एस. आर. रंगनाथन (भारतीय पुस्तकालय विज्ञान के जनक) के अनुसार, "पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है।" उच्च शिक्षा के परिदृश्य में यह कथन आज और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है।

शोध के प्रमुख उद्देश्य

- महाविद्यालयीन शिक्षा की गुणवत्ता और शोध कार्य में पुस्तकालय के प्रत्यक्ष योगदान का मूल्यांकन करना।
- डिजिटल युग में पारंपरिक पुस्तकालयों के सामने आने वाली तकनीकी और ढांचागत चुनौतियों की पहचान करना।
- छात्रों के बीच सूचना साक्षरता (Information Literacy) बढ़ाने में पुस्तकालय कर्मचारियों की भूमिका का अध्ययन करना।
- पुस्तकालय सेवाओं को अधिक उपयोगकर्ता-केंद्रित और आधुनिक बनाने के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

पुस्तकालय सेवाओं का बदलता स्वरूप

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के विकास ने पुस्तकालयों की कार्यप्रणाली को पूरी तरह से बदल दिया है। आज के समय में ओपेक (OPAC), डिजिटल डेटाबेस, और ई-जर्नल्स जैसी सुविधाओं ने ज्ञान की पहुंच को भौगोलिक सीमाओं से मुक्त कर दिया है। एक आधुनिक महाविद्यालय पुस्तकालय अब केवल प्रिंट पुस्तकों तक सीमित नहीं है; यह एक हाइब्रिड मॉडल पर काम कर रहा है जहाँ पारंपरिक और डिजिटल संसाधनों का बेहतरीन संतुलन आवश्यक है।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

किसी भी शोध कार्य का आधार पूर्व में किए गए अध्ययनों का मूल्यांकन होता है। उच्च शिक्षा और महाविद्यालय पुस्तकालयों के महत्व पर कई प्रमुख शिक्षाविदों और राष्ट्रीय समितियों ने अपने

विचार प्रस्तुत किए हैं। उदाहरण के लिए, ऐतिहासिक कोठारी आयोग (1964-66) ने स्पष्ट रूप से रेखांकित किया था कि "पुस्तकालय के बिना कोई भी उच्च शिक्षा संस्थान अधूरा है और एक उत्कृष्ट पुस्तकालय के बिना उत्कृष्ट शिक्षा संभव नहीं है।"

हाल के दशकों में, पुस्तकालय विज्ञान के साहित्य में यह स्पष्ट रुझान देखने को मिला है कि पुस्तकालयों का ध्यान 'भौतिक संग्रह' (Physical Collection) से हटकर 'त्वरित पहुंच' (Quick Access) पर केंद्रित हो गया है। विभिन्न शोधकर्ताओं ने यह सिद्ध किया है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के आगमन के बाद उपयोगकर्ताओं के व्यवहार में भारी बदलाव आया है। आज का पाठक लंबी मुद्रित पुस्तकों के बजाय त्वरित, डिजिटल और विशिष्ट जानकारी चाहता है। इस वैचारिक बदलाव ने पुस्तकालय विज्ञान के शोध का मुख्य फोकस हाइब्रिड लाइब्रेरी मॉडल, ई-संसाधनों के उपयोग, और पुस्तकालय पेशेवरों की बदलती भूमिका की ओर मोड़ दिया है।

आधुनिक महाविद्यालय पुस्तकालय की मुख्य चुनौतियां

आज का महाविद्यालय पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण संक्रमण काल (Transition phase) से गुजर रहा है। एक तरफ उसे अपनी पारंपरिक पहचान बनाए रखनी है, तो दूसरी तरफ 21वीं सदी के डिजिटल युग की मांगों को भी पूरा करना है। इस प्रक्रिया में

पुस्तकालय प्रशासन के सामने निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियाँ आती हैं:

1. वित्तीय संसाधनों की निरंतर कमी (Financial Constraints): अधिकांश महाविद्यालयों में पुस्तकालय के लिए आवंटित बजट बहुत सीमित और असंतुलित होता है। मुद्रित पुस्तकों की बढ़ती कीमतें और अंतरराष्ट्रीय ई-जर्नल्स या अकादमिक डेटाबेस की महंगी वार्षिक सदस्यता प्राप्त करना एक बड़ी चुनौती है।
2. तकनीकी उन्नयन और उसका रखरखाव (Technological Upgradation): पुस्तकालयों का स्वचालन (Library Automation) केवल एक बार की प्रक्रिया नहीं है। ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर का नियमित अपडेट, कंप्यूटर हार्डवेयर का रखरखाव, और इंटरनेट की उच्च गति सुनिश्चित करना एक निरंतर चलने वाली और खर्चीली प्रक्रिया है।
3. पेशेवर कर्मचारियों का कौशल विकास (Skill Development of Staff): पारंपरिक पुस्तकालय विज्ञान और आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी में बड़ा अंतर है। पुस्तकालय कर्मचारियों को नई तकनीकों, ओपेक (OPAC), RFID सिस्टम, और डिजिटल डेटाबेस प्रबंधन के लिए प्रशिक्षित करना एक बड़ी प्रशासनिक चुनौती है।
4. छात्रों की घटती भौतिक उपस्थिति (Decreasing Physical Footfall): स्मार्टफोन्स और इंटरनेट की सहज उपलब्धता के कारण छात्र अब पुस्तकालय की ओर रुख करने से बचते हैं। छात्रों को प्रामाणिक संसाधनों (Authentic resources) के महत्व को समझाना एक गंभीर चुनौती बन गया है।
5. स्थान और बुनियादी ढांचे का अभाव (Space and Infrastructure): आधुनिक पुस्तकालयों में पारंपरिक रीडिंग रूम के साथ-साथ 'ई-लर्निंग ज़ोन' और समूह चर्चा कक्षों की आवश्यकता होती है, जिसके लिए उपयुक्त भवन का अभाव होता है।

आधुनिक पुस्तकालय सेवाएं (Modern Library Services)

बदलते शैक्षिक परिवेश और तकनीकी प्रगति के साथ, एक आदर्श महाविद्यालय पुस्तकालय को निम्नलिखित आधुनिक सेवाएं प्रदान करनी चाहिए:

- वेब-ओपेक (Web-OPAC): ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग का उन्नत रूप, जिससे छात्र इंटरनेट के जरिए पुस्तकों की स्थिति जांच सकते हैं।
- संस्थागत रिपोजिटरी (Institutional Repository): शोध प्रबंध, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, पुराने प्रश्न पत्र आदि का डिजिटल संग्रह तैयार करना।
- सामयिक जागरूकता सेवा (CAS) और चयनात्मक सूचना प्रसार (SDI): उपयोगकर्ताओं को उनके विषय से संबंधित नवीनतम पत्रिकाओं और शोध की जानकारी नियमित रूप से प्रदान करना।
- रिमोट एक्सेस सुविधा (Remote Access): क्लाउड-आधारित तकनीकों का उपयोग करके परिसर के बाहर भी ई-पुस्तकों तक पहुंच प्रदान करना।
- ई-लर्निंग और मेकरस्पेस: पुस्तकालय के भीतर डिजिटल कॉर्नर स्थापित करना जहाँ उच्च गति का इंटरनेट और कंप्यूटर उपलब्ध हों।

पुस्तकालयों के उन्नयन हेतु महत्वपूर्ण सुझाव

1. बजट में आनुपातिक वृद्धि: यूजीसी (UGC) के दिशा-निर्देशों के अनुसार, कुल बजट का एक निश्चित प्रतिशत (6% से 10%) पुस्तकालय विकास के लिए आवंटित होना चाहिए।
2. कंसोर्टियम का लाभ (Library Consortium): INFLIBNET

के N-LIST प्रोग्राम या DELNET जैसे पुस्तकालय नेटवर्क का सदस्य बनना चाहिए।

3. उपयोगकर्ता अभिविन्यास कार्यक्रम: छात्रों के लिए 'पुस्तकालय परिचय कार्यक्रम' आयोजित करना ताकि वे ई-संसाधनों का उपयोग करना सीख सकें।

4. कर्मचारियों का निरंतर प्रशिक्षण: पुस्तकालय पेशेवरों के लिए नियमित कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित किए जाने चाहिए।

5. उपयोगकर्ता-अनुकूल वातावरण: पुस्तकालय का माहौल आकर्षक, शांत और वातानुकूलित होना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि 21वीं सदी का महाविद्यालय पुस्तकालय केवल 'ज्ञान का भंडार' नहीं रह गया है, बल्कि यह 'ज्ञान सृजन का एक सक्रिय केंद्र' बन चुका है। तकनीकी युग में पुस्तकालय की प्रासंगिकता खत्म नहीं हुई है, बल्कि इसकी भूमिका और अधिक जटिल तथा महत्वपूर्ण हो गई है। डिजिटल संसाधनों की बाढ़ के बीच सही और सटीक जानकारी तक पहुंचना एक चुनौती है, और यही पर एक कुशल लाइब्रेरियन एक 'नेविगेटर' की भूमिका निभाता है। भविष्य के पुस्तकालयों को एक 'हाइब्रिड मॉडल' अपनाना होगा—जहाँ मुद्रित पुस्तकों की महक भी हो और डिजिटल दुनिया की गति भी। जब एक पुस्तकालय तकनीकी रूप से उन्नत, पर्याप्त बजट से समर्थित, और कुशल पेशेवरों द्वारा संचालित होता है, तभी वह उच्च शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को प्राप्त करने में महाविद्यालय का सच्चा भागीदार बन सकता है।
